B-2
2-15
Ancient India

बौद्ध धर्म

* अष्टांगिक मार्ग को 3 भागो मे बांटा जा सकता है।

1) प्रज्ञा 2) शील 3) समाधि

* सारनाथ में उपदेश देने के बाद बुद्ध ने संघ का निर्माण किया, जिसमें तत्कालीन भिक्षुओं की संख्या 60 थी यह संघ गणतंत्रात्मक पद्धति पर कार्य करता था।

* संघ के कार्य संचालन हेतु न्यूनतम 1/3 सदस्यों की उपस्थिति आवश्यक थी।

* बौद्ध संघ की बैठक की अध्यक्षता आसन प्रज्ञापक करते थे।

* संघ में किसी भी विषय को प्रस्ताव के रूप में रखा जाता था, जिसे 'ञत्ति' कहा जाता था तथा प्रस्ताव पढ़ने की प्रक्रिया को अनुसावन कहा जाता था प्रस्ताव पर चर्चा के बाद गुप्त मतदान होता था जिसे गुल्लक कहा जाता था।

* संघ के पास सदस्यों को दण्ड देने का भी अधिकार था।

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

⇒ बौद्ध संघ में प्रवेश के नियम

i) चोर, डकैत, रोगी तथा असामाजिक तत्वों का संघ में प्रवेश वर्जित था।

ii) दास, सैनिक, ऋणी एवं नाबालिग को क्रमशः अपने स्वामी, राजा, ऋणदाता एवं माता-पिता की अनुमति मिलने के बाद ही संघ में प्रवेश दिया जाता था।

* वैशाली की आम्रवाटिका में ही बुद्ध ने पहली बार संघ का दरवाजा स्त्रियों के लिए खोला और यह भविष्यवाणी भी कर दी कि संघ में महिलाओं के प्रवेश से संघ की आयु कम हो जाएगी। बुद्ध का यह वाक्य अक्षरशः सही सिद्ध हुआ क्योंकि 500-600 ई. तक आते-आते वज्रयान सम्प्रदाय का उदय हो गया जिसमें बुद्ध की मूल शिक्षाओं से हटकर अन्य बातों का भी प्रावधान था।

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

⇒ बौद्ध संघ में प्रवेश करने वाली महिलाएं:

→ प्रजापति गौतमी, आम्रपाली (वैशाली की नगरवधु) यशोधरा

→ बौद्ध संघ में महिलाओं के प्रवेश हेतु आनंद एवं गौतमी ने बुद्ध से निवेदन किया।

→ उपसम्पदा : बौद्ध संघ में व्यक्तियों का प्रवेश

→ स्त्रियों के संबंध में संघ के अनुशासन संबंधित नियम विनय पिटक के भिक्खुनी विभंग से लिया गया है।

बौद्ध धर्म के त्रिरत्न

- बुद्ध
- धर्म
- संघ

* संघ में चार मास (वर्षा ऋतु में) पातिमोक्ख (प्रातिमोक्ष) का पालन किया जाता था। पातिमोक्ख एक विधि-निषेध है, जिसे विनयपिटक के सुत्त विभंग से लिया गया है। जब किसी विशेष दिन पातिमोक्ख को पढ़ा जाए तो उसे उपोसथ कहा जाता था। यह विशेष दिन बुद्ध पूर्णिमा के दिन होता है।

अशोक के भाब्रू (बैराट) शिलालेख में त्रिरत्न अंकित है।

* संघ को अपने सदस्यों को दण्ड भी देने का अधिकार था। संघ में 3 प्रकार के दण्ड प्रचलित थे।

1) ब्रह्मदण्ड - बौद्ध समाज से बहिष्कृत करना।
2) मानत्त - थोड़े समय के लिए संघ से निष्कासित करना।
3) पारिवास - हमेशा के लिए संघ से निष्कासित करना।

KGS IAS KHAN GLOBAL STUDIES KHAN SIR

बौद्ध संघ का प्रचार / गौतम बुद्ध की यात्राएं :

ज्ञान प्राप्ति (बोधगया) → **सारनाथ** : 5 ब्राह्मणों को उपदेश (धर्म चक्र प्रवर्तन)

↓

काशी : व्यापारी नेता जोष्ठिन को उपदेश

↓

उरुवेला

↓

राजगृह : संजय शिष्य बने तथा संजय के दो शिष्य (सारिपुत्र व मोदगलायन) भी बुद्ध के शिष्य बने। यहीं बिम्बिसार ने बुद्ध को वेलुवन विहार तथा जेतवन विहार दान में दिया।

↓

कपिलवस्तु : शाक्य क्षत्रियों ने आमंत्रित किया

↓

अनुपिय : आनंद, उपालि एवं देवदत्त बुद्ध के शिष्य बने

↓

राजगृह : बुद्ध, अजातशत्रु से मिले और यहीं पर अजातशत्रु ने वज्जिसंघ को जीतने हेतु बुद्ध की सहायता मांगी थी। यहीं आम्रपाली ने बुद्ध को शास्त्रार्थ के लिए चुनौती दी।

KGS IAS KHAN GLOBAL STUDIES KHAN SIR

↓

वैशाली : यहाँ आम्रपाली ने बुद्ध को आम्रवाटिका दान में दी। बुद्ध ने मगध के शासक अजातशत्रु और लिच्छवी शासकों के मध्य समझौता करवाया। यहाँ लिच्छवियों ने बुद्ध को कूटागारशाला दान में दिया।

↓

सुमसुमारगिरि : भर्गों की राजधानी

↓

कौशाम्बी : शासक- उदयन ने बुद्ध की शिष्यता ग्रहण की तथा बुद्ध को घोषित रामविहार उपहार में दिया। यहीं पर बुद्ध उदयन एवं अवन्ति के शासक प्रद्योत के मध्य मध्यस्थता करवाते हैं।

KGS IAS
KHAN SIR

↓

मथुरा : प्रद्योत का पुत्र अवन्तिपुत्र बुद्ध का शिष्य बना

↓

श्रावस्ती : कोशल की राजधानी, शासक→ प्रसेनजित
बुद्ध ने सर्वाधिक समय व्यतीत किया।
जेतवन विहार बुद्ध को यहीं पर दान में मिला। इस विहार के मिलने का वर्णन भरहुत स्तूप की रेलिंग पर है। प्रसेनजित द्वारा बुद्ध को यहाँ पुब्बाराम विहार उपहार में दिया गया।

↓

पावा : मल्लों की राजधानी
अंतिम शिष्य सुभद्र को बनाया

↓

कुशीनारा/ कुशीनगर : बुद्ध को महापरिनिर्वाण प्राप्त हुआ।

⇒ बौद्ध संगीति

प्रथम बौद्ध संगीति - 483 ई.पू.

→ स्थान : राजगृह (गिरिव्रज) की सप्तपर्णी गुफा में
→ अध्यक्ष : महाकस्सप , शासक : अजातशत्रु
→ परिणाम : सुत्तपिटक (रचना - आनंद द्वारा) तथा विनयपिटक (रचना - उपालि द्वारा) की रचना हुई।

↳ सुत्त पिटक : बुद्ध की शिक्षाएं उपदेश के रूप में बौद्ध धर्म का इनसाइक्लोपीडिया

↳ विनय पिटक : बौद्ध संघ के अनुशासन से संबंधित

↳ प्रथम बौद्ध संगीति को पंचशतिका (500 लोगों की उपस्थिति) भी कहते हैं।

KGS KHAN GLOBAL STUDIES IAS Most Trusted Learning Platform

द्वितीय बौद्ध संगीति - 383 ई.पू.

- स्थान - वैशाली
- शासक - कालाशोक
- अध्यक्ष - साबकमीर
- आयोजन का कारण - पूर्व एवं पश्चिम के भिक्षुओं के मध्य विवाद
- परिणाम - बौद्ध संघ का विभाजन

स्थिरवादी → ये बुद्ध की शिक्षाओं का अक्षरशः पालन करने वाले थे तथा किसी भी प्रकार के बदलाव के पक्ष में नहीं थे।

महासांघिक → ये बौद्ध धर्म मे कुछ बदलाव के पक्ष मे थे।

KGS IAS KHAN GLOBAL STUDIES Most Trusted Learning Platform KHAN SIR